कथकली नृत्य

Kathakali Dance

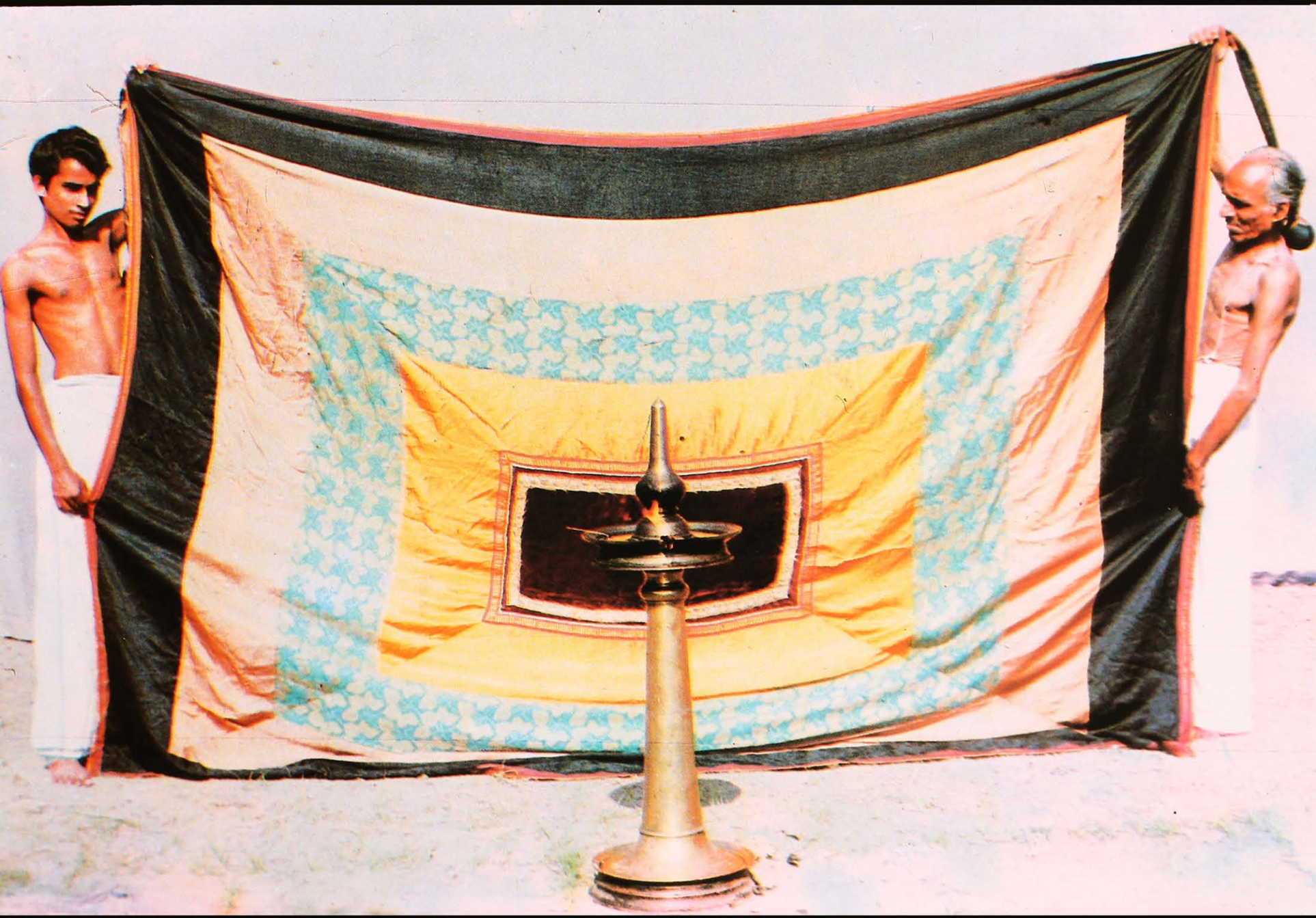

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

1. कथकली के प्रदर्शन से पहले घण्टी के समान धातु केएक दीपक को नारियल के तेल में प्रज्ज्वलित किया जाता है, इसे *निलाविलक्क्* कहा जाता है। यह दीपक पर्दे के सामने रखा जाता है और पुराने दिनों में केवल यही दीपक मंच पर प्रकाश का एकमात्र स्त्रोत होता था। दो व्यक्ति आयताकार पर्दे को पकड़ते हैं, जिसे *तिरश्शीला* कहा जाता है। कुछ निश्चित पात्रों के मंच पर प्रवेश के लिए इसका एक विशेष अर्थ है।

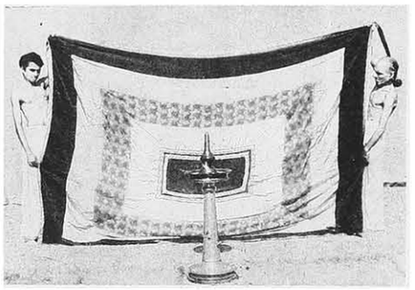

1. Before a Kathakali performance, the bell metal lamp called *Nilavilakku* is lighted with coconut oil. It is placed in front of the curtain and was the only source of light on the stage in olden days. Two men hold the rectangular curtain called *Tirasseela*. It has a special significance for the entry of certain characters on the stage.

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

2. वाद्य समूह में, जो केरल की अन्य परम्परागत निष्पादन कलाओं में भी प्रयोग में लाया जाता है, विधिवत् *चेंडा, मद्दलम्, चेंगिला, इलत्तालम्, इडक्का और* शंख को सम्मिलित किया जाता है। यहाँ कलाकार (वादक) *मद्दलम्, चेंगिला, इलत्तालम्* तथा *इडक्का* बजाते हुए दिखाई दे रहे हैं।

2. The orchestra which is also used in other traditional performing arts of Kerala, normally comprises the *Chenda, Maddalam, Chengila, Ilathalam, Idakka* and *Shankhu*. Here the artists are seen playing on the *Maddalam, Chengila, Ilathalam* and *Idakka*.

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

3. *तिरानोट्टम्,* प्रदर्शन से पहले कुछ प्रमुख चरित्रों का परिचय है, इसका शाब्दिक अर्थ है– पर्दे के पीछे से झांकना। यह चरित्र (पात्र) नाटक गृह केपार्श्व भाग से मंच पर प्रवेश नहीं करतेपर पर्दे के पीछे खड़े होते हैं। पर्दा हटाने से पहले नर्तक एक लघु नाटकीय नृत्य खण्ड प्रस्तुत करता है। यह एक रहस्य की रचना करता है; दर्शक उत्कंठा से पर्दे के हटने और नर्तक को देखने की प्रतीक्षा करते हैं। इस चित्र में एक *कत्ती* चरित्र *तिरानोट्टम्* करते हुए दिखाई दे रहा है।

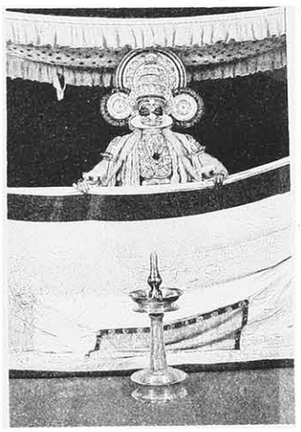

3. *Tiranottam,* literally meaning looking from behind the curtain, is the introduction of certain principal characters before the performance. These characters do not make a stage entry from the wings but, stand behind the curtain. The dancer performs short dramatic dance pieces before the curtain is removed. This creates a suspense as the audience eagerly waits the removal of the curtain to behold the dancer. In this picture, a *kathi* character is seen doing *tiranottam.*

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

4. *चुवन्नाताढ़ी* (लाल रंग की दाढ़ी वाला चरित्र) का *तिरानोट्टम्* इस चित्र में दर्शाया गया है। यह दानव या तामसिक चरित्रों जैसे दुःशासन या राक्षस के रूप में जाने जाते हैं। इस *तिरानोट्टम्* में इस चरित्र की सारी क्रूरता और दानवीय शक्ति को प्रदर्शित किया जाता है। इसकी डरावनी विशेषताओं को बढ़ाने के लिए सहायक संगीत व आवाजों की उत्पत्ति नर्तक द्वारा की जाती हैं।

4. *Tiranottam* of *chuvanna thadi* (red bearded character) is shown in this picture. These are known as the demonic or *tamasika* characters such as,Dussasan or Rakshasas. All the cruelty and evil power of the character is displayed in this *tiranottam*. The accompanying music and sounds produced by the dancer also add to his fearsome quality.

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

5. *अहार्य,* जो कि वेशभूषा और मेकअप (साज-सज्जा) है, कथकली नृत्य के प्रदर्शन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मेकअप का पहला भाग *तेप्पु* है, जो स्वयं नर्तक द्वारा किया जाता है। यहाँ नर्तक *वेल्लात्ताढ़ी* (सफेद दाढ़ी वाले चरित्र) के लिए मेकअप करता हुआ दिखाई दे रहा है।

5. *Aharya,* that is, costumes and make-up,play a significant role in Kathakali dance performance. The first part of the make-up is the *teppu* which is done by the dancer himself. Each character has a distinct *teppu.* The dancer is seen putting on the make-up for *vellathadi* (white bearded character).

FEVICOL

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

6. कथकली मेकअप के चरण हैं-*तेप्पु*, *चुट्टी* और *उडुत्तुकेटट्*। मेकअप के दूसरे चरण को *चुट्टीकुत्तु* कहा जाता है, जो मेकअप में प्रशिक्षित कलाकारों द्वारा किया जाता है। चावल तथा चूने के घोल के मिश्रण का प्रयोग मेकअप के आधार के रूप में किया जाता है। आजकल दाढ़ी को दर्शाने के लिए ड्राईंग पेपर की पट्टी को काट कर चेहरे के ऊपर लगाया जाता है। *चुट्टी* कलाकार वेशभूषा का प्रमुख भी होता है।

6. The stages of make-up of Kathakali are the *teppu, chutti* and *uduthukettu.* The second stage of make-up is called *chuttikuthu,* which is done by trained make-up artists. A mixture of rice and lime paste is used as base and, nowadays, strips of drawing paper are cut and placed on top to give the effect of the beard. The *chutti* artist is also in charge of the costumes.

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

7. इस चित्र में मेकअप का तीसरा चरण *उडुत्तुकेट्ट्* दिखाई दे रहा है। कपड़े के बहुत से वस्त्रों से एक विशाल घाघरा बनाया गया है, जो केरल के अनेक परम्परागत शास्त्रीय नृत्यों जैसे तेय्यम्, मुडियेट्ट् और कूडियाट्टम् में पहनी जाने वाली वेशभूषा के समान है। कथकली नृत्य में यहाँ प्रत्येक चरित्र के लिए आदर्शभूत वेशभूषा और मुकुट हैं।

7. The third stage of make-up, *uduthukettu* is seen in this picture. The large skirt made up of several metres of cloth is similar to the costume worn in many traditional ritual dances of Kerala like Teyyam, Mudiyettu and Koodiyattam. In Kathakali dance, there are typical costumes and headgears for each character.

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

8. कथकली नृत्य में प्रत्येक चरित्र की रचना के लिए भिन्न मेकअप का प्रयोग किया जाता है। *पच्चा, कत्ती, ताढ़ी, करि* या *मिनुक्क्* प्रमुख पात्र हैं। *पच्चा* सतगुण या उत्तम विशेषताओं जैसे नल, युधिष्ठिर, अर्जुन आदि से सम्पन्न है। *पच्चा* चरित्र का चेहरा चमकीले हरे रंग से रंगा होता है। इस चित्र में आप एक नर्तक को कथकली की एक मौलिक मुद्रा में देख रहे हैं।

8. In the Kathakali dance, each character type uses a different make-up. The more prominent characters are the *pacha, kathi, thadi, kari or minukku.* The *pacha* is endowed with *satwaguna* or noble qualities such as Nala, Yudhishtira and Arjuna. The face of the *pacha* character is painted bright green. In this picture you see a dancer in the basic stance of Kathakali.

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

9. यहां एक *पच्चा* चरित्र तांडव की एक वीरतापूर्ण नृत्य मुद्रा में दिखाई दे रहा है, इसे *कलाशम्* कहा जाता है। इसे पद्य गायन के अन्त में प्रस्तुत किया जाता है।

9. A *pacha* character is seen here in a vigorous dance pose of *tandava,* called *kalasam.* It is performed at the end of sung verses.

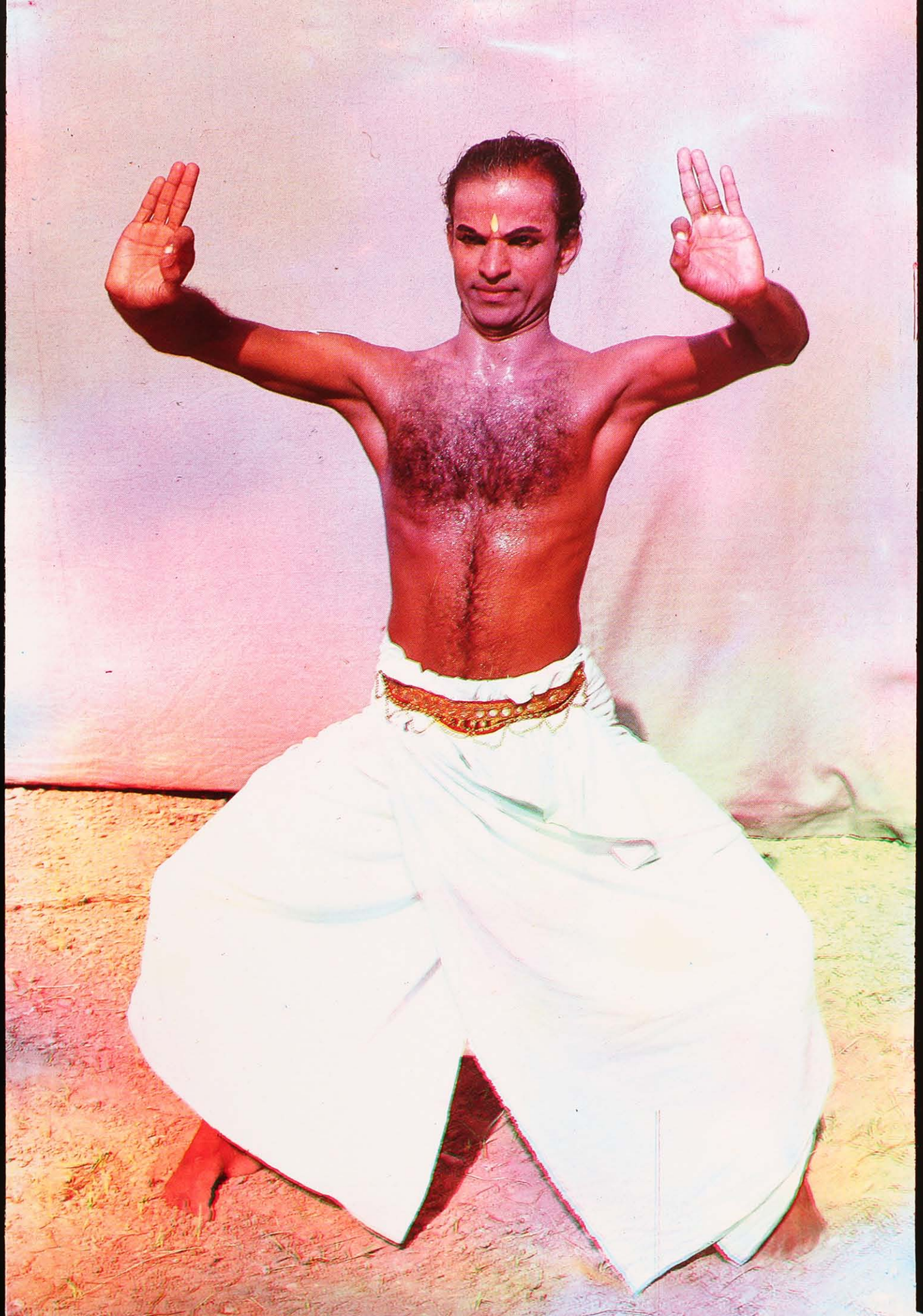

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

10. यह चित्र एक नारी चरित्र द्वारा प्रवेश से पहले ली गई मौलिक स्थिति को दर्शाता है। कथकली नृत्य में ज्यादातर आयताकार या चतुर्भुजाकार रूप के भूतल और स्थान का प्रयोग किया जाता है।

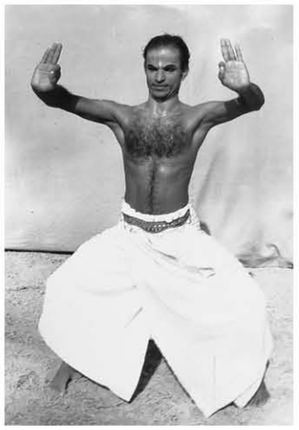

10. This picture shows the basic position taken by the female character before the entry. Kathakali dance mostly uses space and floor area to form rectangles and squares.

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

11. यह चित्र नर्तकी को एक नारी चरित्र की सम्पूर्ण वेशभूषा में प्रवेश करते हुए दर्शा रहा है।

11. This picture shows the dancer in full costume of a female character making an entry.

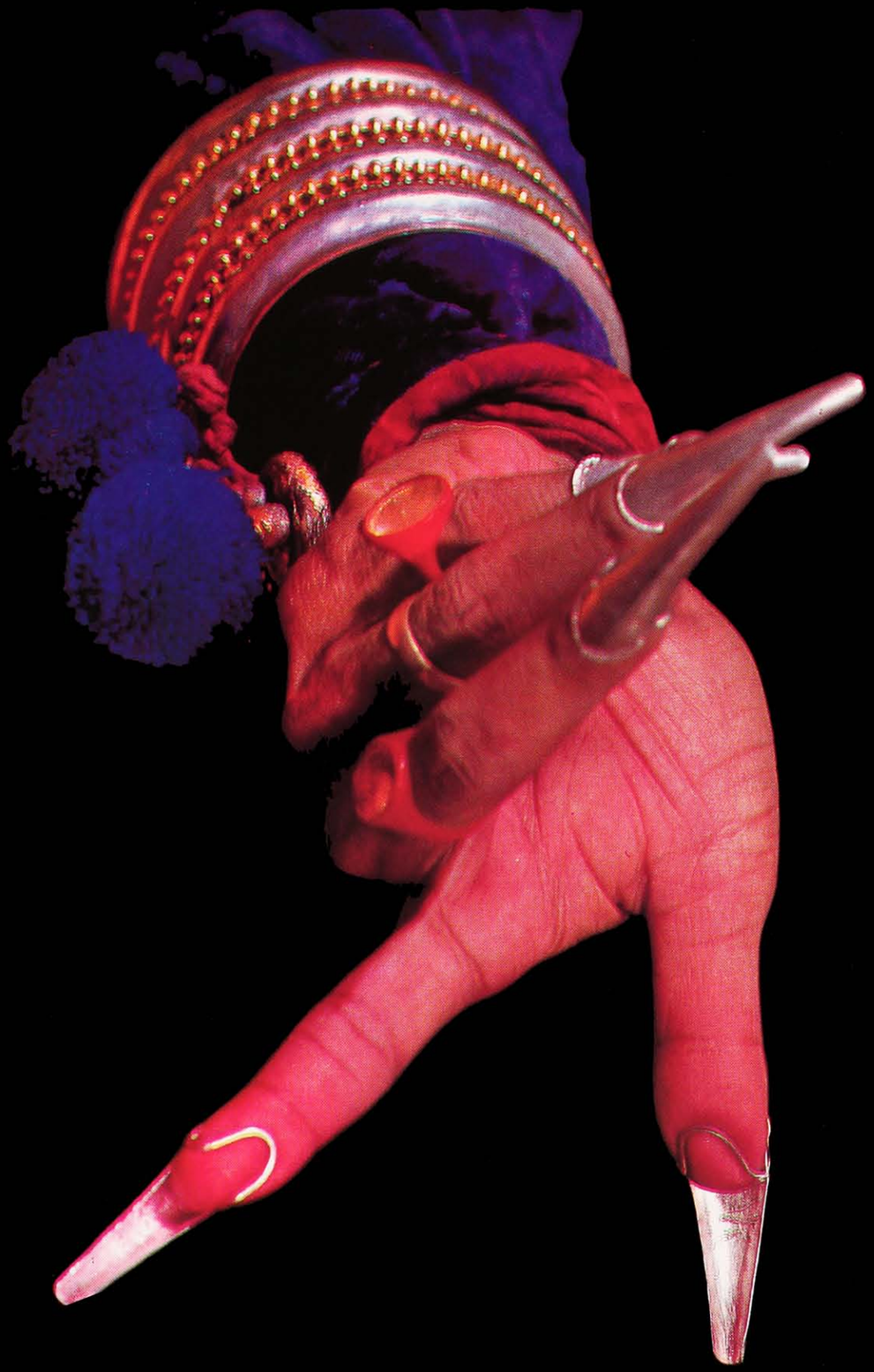

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

12. इस चित्र में आप हस्तमुद्रा *अर्द्धचंद्रम्* को देख रहे हैं, जिसका प्रयोग अर्द्धचंद्र को दर्शाने के लिए किया जाता है। कथकली में मुद्राएं असंयुक्त; एक हाथ की मुद्राओं, संयुक्त; दोनों हाथों की मुद्राओं या मिश्रम्; सम्मिलित मुद्राओं द्वारा प्रदर्शित की जाती हैं।

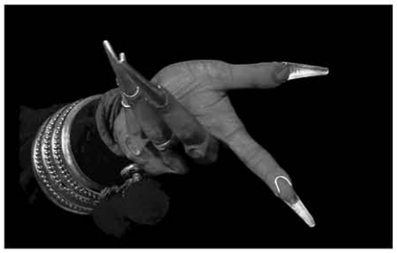

12. In this picture you see the *Ardhachandram,* the hand gesture which is used to signify the half-moon. In kathakali, *mudras* may be shown through *asamyukta,* single handed gestures, *samyukta,* double handed and *mishra,* mixed gestures.

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

13. इस चित्र में आप नर्तक को *हस्तलक्षणा दीपिका* की चौबीस हस्तमुद्राओं में से ली गई चौदहवीं हस्तमुद्रा को प्रदर्शित करते हुए देख रहे हैं, इसे *भ्रमरा* कहा जाता है। *हस्तलक्षणा दीपिका* नाट्यशास्त्र की एक शाखा है, जो कूडियाट्टम् और कथकली में हस्तमुद्रा भाषा के लिए आधार प्रदान करती है।

13. Of the twenty four hand gestures from *Hastalakshana Deepika,* in this picture you see the dancer showing the 14th hand gesture called *Bhramara*. The *Hastalakshana Deepika* is an offshoot of *Natya Shastra,* which is the basis for the hand gesture language in Koodiyattam and Kathakali.

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

14. इस चित्र में आप कृष्ण को देख रहे हैं, उसके मेकअप तथा मुकुट को ध्यान से देखिए। वह बांसुरी बजा रहा है, जबकि राधा प्रेम और भक्ति से उसकी बांसुरी सुन रही है।

14. In this picture you see Krishna, notice the headgear and make-up. He is playing the flute while Radha listens with love and devotion.

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

15. इस चित्र में कृष्ण अपने *पीलिमुडि* (मुकुट) के साथ दिखाई दे रहा है। कृष्ण के लिए मुकुट भिन्न प्रकार का है, जिसके द्वारा यह पता चलता है कि वह *पच्चा* चरित्र है। राम के लिए भी इसी प्रकार की वेशभूषा और मेकअप को प्रयोग में लाया जाता है। मेकअप का यह प्रकार केरल में गुरुवायूर मंदिर में प्रस्तुत किये जाने वाले कृष्णानाट्टम् के बहुत सादृश्य है।

15. In this picture, Krishna is seen with his *peelimudi*. The headgear for Krishna is different, though he is a *pacha* character. Rama also appears with the same costume and make-up. This type of make-up has close resemblance to the form known as Krishnanattam performed in the Guruvayoor temple in Kerala.

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

16. यहाँ कृष्ण अपनी हस्तमुद्रा द्वारा एक भंवरे को एक कमल से मधु पीते हुए प्रदर्शित कर रहा है। यह *सम्भोग श्रृंगार* या प्रेम का प्रतीक है।

16. Krishna showing the hand gesture of a beetle sucking honey from a lotus is seen here. It is a symbol of love or *sambhoga shringara*.

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

17. कथकली में नारी चरित्र को *मिनुक्कु* कहा जाता है। इस चित्र में आप *मिनुक्कु* चरित्र को करुणा रस या दया भाव का चित्रण करते हुए देख सकते हैं।

17. The female character in Kathakali is called *minukku*. In this picture you can see the *minukku* character depicting ***karuna rasa*** or compassion.

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

18. नल और दमयंती की कहानी से लिए गये इस दृश्य में नव-दम्पत्ति (नल व दमयंती) को महल के बगीचे में अपना मधुमास मनाते हुए प्रदर्शित किया गया है।

18. A scene from the story of Nala and Damayanti shows the newly wed couple enjoying their honeymoon in the palace garden.

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

19. इस चित्र में आप *वेल्लात्ताढ़ी* (सफेद दाढ़ी वाले चरित्र) को देख रहे हैं, जो कथकली में एक महत्वपूर्ण चरित्र है। नर्तक द्वारा पहना गया गोल मुकुट, पंखो वाली जाकेट और विशेष मेकअप हनुमान का चित्रण कर रहा है, वेशभूषा एक बंदर का अक्स बना रही है। यहां हनुमान् एक हाथी के लिए भाव प्रदर्शित करते हुए दिखाई दे रहा है।

19. In this picture you see the *vellathadi* (white bearded character) which is an important character in Kathakali. The special make-up, jacket with fur and the round headgear is worn by the dancer depicting Hanuman, the costume gives the illusion of a monkey. Hanuman is seen here showing the gesture for an elephant.

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

20. यह नाटकीय दृश्य नाटक *दुर्योधन वधम्* से लिया गया है। कथकली नृत्य नाट्य पहलू के मामले में बहुत समृद्ध है। इस दृश्य में *भगवद्दूत्* उपकथा का चित्रण किया गया है। वह इस प्रकार है कि कृष्ण शांति दूत के रूप में दुर्योधन के पास पहुंचे और अंततः पांडवों को पांच गांव दिये जाने की प्रार्थना कर रहे हैं पर दुर्योधन ऐसा करने से इंकार कर रहा है।

20. This is a dramatic scene from the play *Duryodhana Vadham*. Kathakali is very rich in the *natya* aspect of dance. This scene depicts the *Bhagavaddoothu,* that is, Krishna arriving as the messenger of peace to request that at least five villages be given to the Pandavas. Duryodhan refuses to do so.

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

21. यह चित्र *कल्याण सौगंधिकम्* से लिये गये एक दृश्य को दर्शा रहा है। इस कहानी से ली गई उपकथा यह है कि जब भीम दिव्य फूल *कल्याण सौगंधिका* की तलाश में निकले और कदली वन पहुंच गये। हनुमान ने भीम की परीक्षा लेने के लिए उसके रास्ते को रोक लिया तब क्रोधित भीम ने कहा कि बूढ़े वानर एक तरफ हटो।

21. This picture shows a scene from *Kalyana Saugandhikam*. The episode from the story is when Bhima goes in search of the divine flower *Kalyana Saugandhika* and reaches *Kadaleevana*. Hanuman tries to put Bhima to test and blocks his way. An angry Bhima asks the old monkey to step aside.

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

22. कथकली नृत्य नाटक का एक बहुत शैलीगत तत्व है। इस चित्र में आप *कीचक वधम्* की कहानी से लिये गये एक दृश्य को देख सकते हैं। इस चित्र में पांचाली, जो अपना वेश बदले हुए है और राजा विराट के महल में सेविका के रूप में कार्य करती है, कीचक के कामातुर निवेदन को अस्वीकार कर रही है।

22. Kathakali dance has a very stylised element of drama. In this picture you can see a scene from the story of *Keechaka Vadham*. The lustful approach of Keechaka is repulsed by Panchali who is disguised and working as a servant at King Virata's palace.

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

23. कथकली नृत्य में महाकाव्यों से ली गई उपकथाएं बहुत प्रसिद्ध हैं। यह दृश्य *तोरणा युद्धम्* से लिया गया है। सीता, रावण ने जिसका अपहरण कर लिया था, अशोक वन में बंदी बना कर रखी गई है। रावण उसे मूल्यवान् आभूषणों और कपड़ों का लालच दे रहा है तथा उसे अपने साथ विवाह करने के लिए कह रहा है, पर सीता ने उसका यह प्रस्ताव अस्वीकार दिया और उसे गम्भीर परिणाम भुगतने की धमकी दे रही है।

23. Episodes from the epics are very popular in Kathakali dance. This scene is from *Thorana Yudham*. Sita who has been abducted by Ravana is held captive in the *Ashoka-vana*. He offers valuable ornaments and clothes to her and asks her to marry him. But Sita refuses and warns him of serious consequences.

कथकली नृत्य

Kathakali Dance

24. *करुत्ताताढ़ी* (काली दाढ़ी वाला चरित्र) *काट्टालन्* है, इसका अर्थ एक शिकारी या जंगल के निवासी से है। इस चरित्र का मेकअप और वस्त्र सम्पूर्ण रूप से काले या नीले हैं। मुकुट आकार में बेलनाकार है और ऊपर से मोर के पंखों से सजा हुआ है।

24. *Karutha thadi* (black bearded character) is the *Kattalan* meaning a hunter or forest dweller. The make-up and dress are completely black or blue. The headgear is cylindrical in shape and is decorated with peacock feathers on top.

भारत में नृत्य बहुत प्राचीन काल से एक समृद्ध और प्राचीन परम्परा रहा है। विभिन्न कालों की खुदाई, शिलालेखों, ऐतिहासिक वर्णन, राजाओं की वंश-परम्परा तथा कलाकारों, साहित्यिक स्त्रोतों, मूर्तिकला और चित्रकला से व्यापक प्रमाण उपलब्ध होते हैं। पौराणिक कथाएं और दंतकथाएं भी इस विचार का समर्थन करती हैं कि भारतीय जनता के धर्म तथा समाज में नृत्य ने एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया था। जबकि आज प्रचलित 'शास्त्रीय' रूपों या 'कला' के रूप में परिचित विविध नृत्यों के विकास और निश्चित इतिहास को सीमांकित करना आसान नहीं है।

साहित्य में पहला संदर्भ वेदों से मिलता है, जहां नृत्य व संगीत का उद्गम है। नृत्य का एक ज्यादा संयोजित इतिहास महाकाव्यों, अनेक पुराण, कवित्व साहित्य तथा नाटकों का समृद्ध कोष,जो संस्कृत में काव्य और नाटक के रूप में जाने जाते हैं, से पुनर्निर्मित किया जा सकता है। शास्त्रीय संस्कृत नाटक (ड्रामा) का विकास एक वर्णित विकास है, जो मुखरित शब्द, मुद्राओं और आकृति, ऐतिहासिक वर्णन, संगीत तथा शैलीगत गतिविधि का एक सम्मिश्रण है। यहां 12वीं सदी से 19वीं सदी तक अनेक प्रादेशिक रूप हैं, जिन्हें संगीतात्मक खेल या संगीत-नाटक कहा जाता है। संगीतात्मक खेलों में से वर्तमान शास्त्रीय नृत्य-रूपों का उदय हुआ।

खुदाई से दो मूर्तियां प्रकाश में आईं – एक मोहनजोदड़ो काल की कांसे की मूर्ति और दूसरा हड़प्पा काल (2500-1500 ईसा पूर्व) का एक टूटा हुआ धड़। यह दोनों नृत्य मुद्राओं की सूचक हैं। बाद में नटराज आकृति के अग्रदूत के रूप में इसे पहचाना गया, जिसे आम तौर पर नृत्य करते हुए शिव के रूप में पहचाना जाता है। हमें भरतमुनि का नाट्य-शास्त्र शास्त्रीय नृत्य पर प्राचीन ग्रंथ के रूप में उपलब्ध है, जो नाटक, नृत्य और संगीत की कला की स्त्रोत पुस्तक है। आमतौर पर यह स्वीकार किया जाता है कि दूसरी सदी ईसापूर्व – दूसरी सदी ईसवी सन् इस कार्य का समय है। नाट्य शास्त्र को पांचवें वेद के रूप में भी जाना जाता है। लेखक के अनुसार उसने इस वेद का विकास ऋग्वेद से शब्द, सामवेद से संगीत, यजुर्वेद से मुद्राएं और अथर्ववेद से भाव लेकर किया है। यहां एक दंतकथा भी है कि भगवान ब्रह्मा ने स्वयं नाट्य वेद लिखा है, जिसमें 36,000 श्लोक हैं।

नाट्य-शास्त्र में सूत्रबद्ध शास्त्रीय परम्परा की शैली में नृत्य और संगीत नाटक के अलंघनीय भाग हैं। नाट्य की कला में इसके सभी मौलिक अंशों को रखा जाता है और कलाकार स्वयं नर्तक तथा गायक होता है। प्रस्तुतकर्त्ता स्वयं तीनों कार्यों को संयोजित करता है। समय के साथ-साथ जबकि नृत्य अपने आप नाट्य से अलग हो गया और स्वतंत्र तथा विशिष्ट कला के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

प्राचीन शोध-निबंधों के अनुसार नृत्य में तीन पहलुओं पर विचार किया जाता है – नाट्य, नृत्य और नृत्त। नाट्य में नाटकीय तत्व पर प्रकाश डाला जाता है। कथकली नृत्य-नाटक रूप के अतिरिक्त आज अधिकांश नृत्य-रूपों में इस पहलू को व्यवहार में कम लाया जाता है। नृत्य मौलिक अभिव्यक्ति है और यह विशेष रूप से एक विषय या विचार का प्रतिपादन करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है। नृत्त दूसरे रूप में शुद्ध नृत्य है, जहां शरीर की गतिविधियां न तो किसी भाव का वर्णन करती हैं, और न ही वे किसी अर्थ को प्रतिपादित करती हैं। नृत्य और नाट्य को प्रभावकारी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए एक नर्तकी को नवरसों का संचार करने में प्रवीण होना चाहिए। यह नवरस हैं – श्रृंगार, हास्य, करुणा, वीर, रौद्र, भय, वीभत्स, अद्भुत और शांत।

सभी शैलियों द्वारा प्राचीन वर्गीकरण – तांडव और लास्य का अनुकरण किया जाता है। तांडव पुरूषोचित, वीरोचित, निर्भीक और ओजस्वी है। लास्य स्त्रीयोचित, कोमल लयात्मक और सुंदर है। अभिनय का विस्तारित अर्थ

Dance in India has a rich and vital tradition dating back to ancient times. Excavations, inscriptions, chronicles, genealogies of kings and artists, literary sources, sculpture and painting of different periods provide extensive evidence on dance. Myths and legends also support the view that dance had a significant place in the religious and social life of the Indian people. However, it is not easy to trace the precise history and evolution of the various dances known as the 'art' or 'classical' forms popular today.

In literature, the first references come from the *Vedas* where dance and music have their roots. A more consistent history of dance can be reconstructed from the epics, the several *puranas* and the rich body of dramatic and poetic literature known as the *nataka* and the *kavya* in Sanskrit. A related development was the evolution of classical Sanskrit drama which was an amalgam of the spoken word, gestures and mime, choreography, stylised movement and music. From the 12th century to the 19th century there were many regional forms called the musical play or *sangeet-nataka*. Contemporary classical dance forms are known to have evolved out of these musical plays.

Excavations have brought to light a bronze statuette from Mohenjodaro and a broken torso from Harappa (dating back to 2500—1500 B.C.). These are suggestive of dance poses. The latter has been identified as the precursor of the Nataraja pose commonly identified with dancing Siva.

The earliest treatise on dance available to us is Bharat Muni's *Natya Shastra,* the source book of the art of drama, dance and music. It is generally accepted that the date of the work is between the 2nd century B.C.—2nd century A.D. The *Natya Shastra* is also known as the fifth *veda*. According to the author, he has evolved this *veda* by taking words from the *Rig veda,* music from the *Sama veda,* gestures from the *Yajur veda* and emotions from the *Atharva veda*. There is also a legend that Brahma himself wrote the *Natya veda,* which has over 36000 verses.

In terms of the classical tradition formulated in the *Natya Shastra,* dance and music are an inextricable part of drama. The art of *natya* carries in it all these constituents and the actor is himself the dancer and the singer, the performer combined all the three functions. With the passage of time, however, dance weaned itself away from *natya* and attained the status of an independent and specialised art, marking the beginning of the 'art' dance in India.

As per the ancient treatises, dance is considered as having three aspects : *natya, nritya* and *nritta*. *Natya* highlights the dramatic element and most dance forms do not give emphasis to this aspect today with the exception of dance-drama forms like Kathakali. *Nritya* is essentially expressional, performed specifically to convey the meaning of a theme or idea. *Nritta* on the other hand, is pure dance where body movements do not express any mood (bhava), nor do they convey any meaning. To present *nritya* and *natya* effectively, a dancer should be trained to communicate the navarasas. These are : love (shringar), mirth (hasya), compassion (karuna), valour (veer), anger (raudra), fear (bhaya), disgust (bibhatsa), wonder (adbhuta) and peace (shanta).

अभिव्यक्ति है। यह अंगिक,शरीर और अंगों; वाचिक,गायन और कथन; अहार्य, वेशभूषा और अलंकार; और सात्विक, भावों और अभिव्यक्तियों के द्वारा सम्पादित किया जाता है।

भरत और नंदीकेश्वर-दो प्रमुख ग्रंथकारों ने नृत्य को कला के रूप में विचार किया है, जिसमें मानव शरीर का उपयोग अभिव्यक्ति के वाहन के रूप में किया जाता है। शरीर (अंग) के प्रमुख मानवीय अंगों की सिर, धड़, ऊपरी और निचले अंगों के रूप में तथा छोटे मानवीय भागों (उपांगों) की ढोड़ी से लेकर भवों तक चेहरे के सभी भागों तथा अन्य छोटे जोड़ों के रूप में पहचान की जाती है।

नाट्य के दो अतिरिक्त पहलू प्रस्तुतीकरण और शैली के प्रकार है। यहां प्रस्तुतीकरण के दो प्रकार हैं, जिनके नाम हैं – नाट्यधर्मी, जो रंगमंच का औपचारिक प्रस्तुतीकरण है और दूसरा लोकधर्मी कई बार लोक, यर्थाथवादी, प्रकृतिवादी या प्रादेशिक के रूप में अनुवादित। शैली या वृति को चार भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है – कैसकी, लास्य पहलू के संचार में ज्यादा अनुरूप, दक्ष गीतिकाव्य; अरबती, ओजस्वी पुरूषोचित; सतवती जब रासों का चित्रण किया जाता है तब अक्सर इसका उपयोग किया जाता है और भारती (शाब्दिक अंश)।

शताब्दियों के विकास के साथ भारत में नृत्य देश के विभिन्न भागों में विकसित हुआ। इनकी अपनी पृथक शैली ने उस विशेष प्रदेश की संस्कृति को ग्रहण किया; प्रत्येक ने अपनी विशिष्टता प्राप्त की। अतः 'कला' की अनेक प्रमुख शैलियां बनी; जिन्हें हम आज भरतनाट्यम, कथकली, कुचीपुड़ी, कथक, मणिपुरी, और उड़ीसी के रूप में जानते हैं। यहां आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्रों के नृत्य तथा प्रादेशिक विविधताएं हैं, जो सरल, मौसम के हर्षपूर्ण समारोहों, फसल और एक बच्चे के जन्म के अवसर से सम्बंधित हैं। पवित्र आत्माओं के आह्वान और दुष्ट आत्माओं को शांत करने के लिए भी नृत्य किए जाते हैं। आज यहां आधुनिक प्रयोगात्मक नृत्य के लिए भी एक सम्पूर्ण नव निकाय है।

An ancient classification followed in all styles is of *Tandava* and *Lasya*. *Tandava,* the masculine, is heroic, bold and vigorous. *Lasya,* the feminine is soft, lyrical and graceful. *Abhinaya,* broadly means expression. This is achieved through *angika,* the body and limbs; *vachika,* song and speech; *aharya,* costume and adornment; and *satvika,* moods and emotions.

Bharata and Nandikesvara, the two main authorities conceive of dance as an art which uses the human body as a vehicle of expression. The major human units of the body (anga) are identified as the head, torso, the upper and lower limbs,and the minor human parts (upangas), as all parts of the face ranging from the eyebrow to the chin and the other minor joints.

Two further aspects of *natya* are the modes of presentation and the style. There are two modes of presentation, namely the *Natyadharmi,* which is the formalised presentation of theatre and the *Lokadharmi* sometimes translated as folk, realistic, naturalistic or regional. The style or *vrittis* are classified into *Kaiseki,* the deft lyrical more suited to convey the *lasya* aspects, the *Arbati,* the energetic masculine, the *Satawati,* often used while depicting the *rasas* and the *Bharati,* the literary content.

Nurtured for centuries, dance in India has evolved in different parts of the country its own distinct style,taking on the culture of that particular region, each acquiring its own flavour. Consequently, a number of major styles of 'art' dance are known to us today, like Bharatnatyam, Kathakali, Kuchipudi, Kathak, Manipuri and Odissi. Then there are regional variations, the dances of rural and tribal areas, which range from simple, joyous celebrations of the seasons, harvest or birth of a child to dances for the propitiation of demons or for invoking spirits. Today there is also a whole new body of modern experimental dance.

कथकली नृत्य

केरल कई परम्परागत नृत्य तथा नृत्य-नाटक शैलियों का घर है। इनमें सबसे विशिष्ट है– कथकली नृत्य।

आज कथकली एक प्रचलित नृत्य रूप है। इसे तुलनात्मक रूप से हाल ही के समय में उद्‌भव हुआ माना जाता है। हालांकि यह एक कला है, जो प्राचीन काल में दक्षिणी प्रदेशों में प्रचलित बहुत से सामाजिक और धार्मिक रंगमंचीय कला रूपों से उत्पन्न हुई है। *चाकियारकुत्त्, कूडियाट्टम, कृष्णानाट्टम* और *रामानाट्टम* – केरल की कुछ आनुष्ठानिक निष्पादन कलाएं हैं, जिनका कथकली के प्रारूप और तकनीक पर सीधा प्रभाव है। एक दंतकथा के अनुसार जब कालीकट के जमोरिन ने अपने *कृष्णानाट्टम* कार्यक्रम करने वाले समूह को त्रावनकोर भेजने से मना कर दिया, तो कोट्टाराक्कारा का राजा इतना क्रुद्ध हो गया कि उसे *रामानाट्टम* की रचना करने की प्रेरणा हो आई।

केरल के मंदिरों के शिल्पों और लगभग 16वीं शताब्दी के मट्टानचेरी मंदिर के भित्तिचित्रों में वर्गाकार तथा आयताकार मौलिक मुद्राओं को प्रदर्शित करते नृत्य के दृश्य देखे जा सकते हैं, जो कथकली की विशेषताओं को प्रदर्शित करते हैं। शरीर की मुद्राओं और नृत्य कला सम्बंधी नमूनों के लिए कथकली नृत्य शैली केरल की प्राचीन युद्ध सम्बंधी कलाओं की ऋणी है।

कथकली नृत्य, संगीत और अभिनय का मिश्रण है और इसमें अधिकतर भारतीय

Kathakali Dance

Kerala is the home of several traditional dance and dance-drama forms, the most notable being Kathakali.

Kathakali, as a dance form popular today, is considered to be of comparatively recent origin. However, it is an art which has evolved from many social and religious theatrical forms which existed in the southern region in ancient times. Chakiarkoothu, Koodiyattam, Krishnanattam and Ramanattam are few of the ritual performing arts of Kerala which have had a direct influence on Kathakali in its form and technique. Legend has it that the refusal of the Zamorin of Calicut to send his Krishnanattam troupe to Travancore, so enraged the Raja of Kottarakkara, that he was inspired to compose the Ramanattam.

In the temple sculptures in Kerala and the frescoes in the Mattancheri temple of approximately the 16th century, dance scenes depicting the square and rectangular basic positions so typical to Kathakali are seen. For body movements and choreographical patterns, Kathakali is also indebted to the early martial arts of Kerala.

Kathakali is a blend of dance, music and acting and dramatizes

महाकाव्यों से ली गई कथाओं का नाटकीकरण किया जाता है। यह शैलीबद्ध कला रूप है, इसमें अभिनय के चार पहलू– *अंगिका, अहार्य, वाचिका, सात्विका* और नृत्त, नृत्य तथा नाट्य पहलुओं का उत्कृष्ट सम्मिश्रण है। नर्तक अपने भावों को विधिबद्ध हस्तमुद्राओं और चेहरे के भावों से अभिव्यक्त करता है और इसके पश्चात् *(पद्म)* पद्यात्मक भाग होता है, जिन्हें गाया जाता है। कथकली नृत्य शैली अपनी मूलपाठ-विषयक स्वीकृति *बलराम भरतम्* और *हस्तलक्षणा दीपिका* से प्राप्त करती है।

आट्टाक्कथा या कहानियों को महाकाव्यों तथा पौराणिक कथाओं से चुना जाता है और इन्हें उच्च स्तरीय संस्कृत पद्य रूप में मलयालम् भाषा में लिखा जाता है। कथकली साहित्य के विशाल भण्डार में मलयालम् भाषा के बहुत से लेखकों ने अपना योगदान दिया है।

कथकली नृत्य का संगीत केरल के परम्परागत *सोपान* संगीत का अनुसरण करता है। *सोपान* संगीत के अन्तर्गत मंदिर के मुख्य गर्भ गृह (मुख्य कक्ष) की ओर जाने वाली सीढ़ियों की पंक्तियों पर *अष्टपदियों* का आनुष्ठानिक गान होता है। कथकली नृत्य संगीत में कर्नाटक रागों का भी प्रयोग होता है और कर्नाटक राग के अन्तर्गत राग और ताल, भाव, रस और नृत्य के प्रतिरूपों नृत्त और नाट्य की पुष्टि करते हैं। वाद्य समूह में, जो केरल की अन्य परम्परागत निष्पादन कलाओं में भी प्रयोग में लाया जाता है, विधिवत् *चेंडा, मद्दलम्, चेंगिला, इलत्तालम्, इडक्का* और *शंख* को सम्मिलित किया जाता है।

कथकली एक दृश्यात्मक कला है, जहाँ पात्र के अनुसार *अहार्य,* वेशभूषा और श्रृंगार नाट्य शास्त्र के सिद्धांतों पर आधारित होता है। पात्रों को कुछ स्पष्ट रूप से परिभाषित प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है जैसे *पच्चा, कत्ती, ताढ़ी, करि* या *मिनुक्क्।* कलाकार (नर्तक) के चेहरे को कुछ इस प्रकार रंग दिया जाता है कि वह एक मुखौटे का आभास देता है। होठों, भौहों और पलकों को उभार कर दिखाया जाता है। चेहरे पर *चुट्टी* बनाने के लिए पिसे हुए चावल का लेप और चूने का मिश्रण लगाया जाता है, जिससे चेहरे का श्रृंगार उभर कर आता है।

कथकली नृत्य मुख्यतयः व्याख्यात्मक होता है। कथकली प्रस्तुतीकरण में पात्रों को मोटे तौर पर *सात्विका, राजसिक* और *तामसिक* वर्गों में विभक्त किया जाता है। *सात्विका* चरित्र कुलीन, वीरोचित, दानशील और परिष्कृत होते हैं। *पच्चा* में हरा रंग प्रमुख होता है और सभी पात्र *किरीट* (मुकुट) धारण करते हैं। कृष्ण और राम मोर पंखों से अलंकृत विशेष मुकुट पहनते हैं। इंद्र, अर्जुन और देवताओं जैसे कुछ कुलीन (राजसी) पात्र *पच्चा* पात्र होते हैं। *कत्ती* प्रकार के पात्र खलनायक पात्र होते हैं पर फिर भी ये *राजसिक* वर्ग के अंतर्गत आते हैं। कभी-कभी ये रावण, कमसा और शिशुपाल जैसे महान् योद्धा और विद्वान् भी होते हैं। मूँछें और *चुट्टीप्पु* नामक छोटी मूठ (घुण्डी) को नाक के अग्रभाग और एक अन्य को माथे के बीच में लगाया जाता है। यह *कत्ती* पात्र के श्रृंगार की विशेषता है। *ताढ़ी* (दाढ़ी) वर्ग के पात्र हैं– *चुवन्ना ताढ़ी* (लाल दाढ़ी) *वेल्लाताढ़ी* (सफेद दाढ़ी) और *करूत्ता ताढ़ी* (काली दाढ़ी)। *वेल्लाताढ़ी* या फिर सफेद दाढ़ी वाला चरित्र सामान्यतया हनुमान का होता है। इसके लिए नर्तक बन्दर की वेशभूषा वाले वस्त्र भी पहनता है। *करि* वर्ग के पात्र, काला रंग जिनके मेकअप का आधार होता है, वह काली वेशभूषा पहनते हैं और इस वर्ग के पात्र शिकारी या जंगल वासी का अभिनय करते हैं। इनके अतिरिक्त यहाँ *मिनुक्क्* जैसे निम्न वर्ग के पात्र होते हैं, जिसमें स्त्रियाँ और ऋषि-मुनि आते हैं।

श्रेष्ठ मानवीय प्रभाव उत्पन्न करने के लिए वेशभूषा और श्रृंगार विस्तृत तथा डिजाइन युक्त होता है। कथकली नृत्य के लिए श्रृंगार की प्रक्रिया को *तेप्प् चुट्टीकुत्त* और *उडुत्तुकेट्ट* में वर्गीकृत किया जाता है। *तेप्प्* को कलाकार स्वयं ही कर लेता है। प्रत्येक पात्र या कलाकार का भिन्न *तेप्प्* होता है। श्रृंगार का दूसरा चरण विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है, जो श्रृंगार/साज–सज्जा में विशिष्टता रखते हैं, बड़ा घेरदार घाघरा (स्कर्ट) इस नृत्य को करते समय पहना जाता है, जिसे *उडुत्तुकेट्ट* कहा जाता है।

stories which are mostly adapted from the Indian epics. It is a stylised art form, the four aspects of *abhinaya —angika, aharya, vachika, satvika* and the *nritta, nritya* and *natya* aspects are combined perfectly. The dancer expresses himself through codified *hastamudras* and facial expressions, closely following the verses *(padams)* that are sung. Kathakali derives its textual sanction from *Balarama Bharatam* and *Hastalakshana Deepika.*

The *attakkathas* or stories are selected from the epics and myths and are written in a highly sanskritised verse form in Malayalam. Many Malayalam writers have also contributed to the vast body of Kathakali literature.

Kathakali music follows the traditional *sopana* music of Kerala It is said to be the ritual singing of the *Ashtapadis* on the flight of steps leading to the sanctum sanctorum. Now Kathakali music also uses *Karnataka ragas* — the *raga* and *tala* conforming to the *bhava, rasa* and dance patterns (*nritta* and *natya*). The orchestra which is also used in other traditional performing arts of Kerala, normally comprises the *Chenda, Maddalam, Chengila, Ilathalam, Idakka* and *Shankhu.*

Kathakali is a visual art where *aharya,* costume and make-up are suited to the characters, as per the tenets laid down in the *Natya Shastra.* The characters are grouped under certain clearly defined types like the *pacha, kathi, thadi, kari* or *minukku.* The face of the artist is painted over to appear as though a mask is worn. The lips, the eyelashes and the eyebrows are made to look prominent. A mixture of rice paste and lime is applied to make the *chutti* on the face which highlights the facial make-up.

Kathakali dance is chiefly interpretative. The characters in a Kathakali performance are broadly divided into *satvika, rajasika* and *tamasika* types. *Satvika* characters are noble, heroic, generous and refined. In *pacha,* green colour dominates and *kirita* (headgear) is worn by all. Krishna and Rama wear special crowns decorated with peacock feathers. The noble characters like Indra, Arjun and the Devas are some of the *pacha* characters. The *kathi* type depict anti-heroes. Though they are of the *rajasika* category, they are sometimes great warriors and scholars such as Ravana, Kamsa and Sisupala to name a few. The moustache and the small knob called *chuttippu* fixed on the tip of the nose and another in the centre of the forehead, is peculiar to the *kathi* character. The characters of the *thadi* (beard) category are the *chuvanna thadi,* (red beard), *vellathadi* (white beard) and the *karutha thadi* (black beard). *Vellathadi* or the white bearded character is generally that of Hanuman, the dancer also wears the costume of a monkey. *Kari* are characters whose make-up have a black base, they wear black costume depicting a hunter or forest dweller. Apart from these, there are minor characters like *minukku* which are the women and sages.

Kathakali costumes and make-up are elaborate and designed so as to give a super human effect. The make-up of Kathakali can be classified into the *teppu, chuttikuthu* and *uduthukettu.* The *teppu* is done by the actor himself. Each character has a distinct *teppu.* The second stage is done by experts who specialise in make-up. The wearing of huge bellowing skirts is called *uduthukettu.*

इस नृत्य शैली के लिए साधारण मंच का प्रयोग किया जाता है। मंच पर तेल का एक बड़ा दिया रखा जाता है और दो लोग मंच पर *तिरश्शीला* नामक पर्दे को थामे रहते हैं। प्रदर्शन से पूर्व मुख्य नर्तक इस पर्दे के पीछे खड़े रहते हैं।

कथकली के अतिरिक्त अन्य किसी नृत्य शैली में पूरी तरह से शरीर के सभी अंगों का उपयोग नहीं होता। इस नृत्य शैली के तकनीकी विवरण में चेहरे की मांसपेशियों से लेकर अंगुलियां, आँखें, हाथ और कलाई सभी कुछ आ जाता है। चेहरे की मांसपेशियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। नाट्य शास्त्र के वर्णन के अनुसार अन्य किसी भी नृत्य शैली में भौंहों, आँख की पुतलियों और निचली पलकों की गति का इतना प्रयोग नहीं किया जाता, जितना कथकली में किया जाता है। शरीर का सारा भार पैरों के बाहरी किनारों पर होता है, जो थोड़े झुके हुए और मुड़े हुए होते हैं।

कलाशम् विशुद्ध नृत्य के क्रम होते हैं, जिनमें कलाकार को स्वयं को अभिव्यक्त करने और अपनी कुशलताओं का प्रदर्शन करने की पूरी छूट होती है। उछालें (कूद), जल्दी से लिये जाने वाले चक्कर (घुमाव), छलांगें और लयात्मक संयोजन सब मिलकर *कलाशम्* बनाते हैं। इसे देखने में मजा आता है।

कथकली नृत्य का प्रदर्शन *केलिकोट्ट्* से आरम्भ होता है, जिसके द्वारा दर्शकों को आकर्षित किया जाता है। इसके बाद *तोडयम्* होता है। यह धार्मिक नृत्य होता है, जिसमें एक या दो कलाकार भगवान् के आर्शीवचनों को ग्रहण करने के लिए प्रार्थना करते हैं। *केलिकोट्ट्* शाम को होने वाले कार्यक्रम की औपचारिक घोषणा होती है। इस समय खुले स्थान पर कार्यक्रम की जगह पर ढोल और मंजीरे बजाये जाते हैं। इसके अंत:भाग के रूप में *पुराप्पाड्* नामक एक विशुद्ध नृत्त खण्ड प्रदर्शित किया जाता है। इसके बाद *मेलाप्पदम्* में संगीतकार तथा ढोलवादक मंच पर अपनी कुशलता का प्रदर्शन कर दर्शकों का मनोरंजन करते हैं। *तिरानोक्क्, पच्चा* या *मिनुक्क्* के अलावा सभी कलाकारों का मंच पर प्रवेश होता है। इसके पश्चात् नाटक या चुने हुए नाटक का एक निश्चित दृश्य आरम्भ होता है।

इलाकियाट्टम प्रदर्शन या प्रस्तुतीकरण का वह भाग है, जहाँ कलाकार (पात्र) को अभिनय में अपनी श्रेष्ठता को प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त होता है। प्रदर्शन के अधिकतर समय में नर्तक कलाकार स्वयं को *चोल्लियाट्टम* में व्यस्त रखता है। अर्थात् संगत करने वाले संगीतकारों द्वारा गाये गये पद्यों के शब्दों पर ही मुख्य रूप से अभिनय करना।

कवि *वल्लतोल* की सेवाओं के परिणामस्वरूप इस शास्त्रीय नृत्य रूप ने नयी प्रेरणा प्राप्त की और आज समाज में होने वाले परिवर्तनों की आवश्यकताओं के अनुरूप, इसमें बहुत कुछ नवीनीकरण भी किये गये हैं।

A simple stage is used. A large oil-fed lamp is placed in front of the stage and two people hold a curtain called *Tirasseela* on the stage, the main dancers stand behind it before the performance.

In no other dance style is the entire body used so completely as in Kathakali. The technical details cover every part of the body from facial muscles to fingers, eyes, hands and wrists. The facial muscles, play an important part. The movement of the eye-brows, the eye-balls and the lower eye-lids as described in the *Natya Shastra* are not used to such an extent in any other dance style. The weight of the body is on the outer edges of the feet which are slightly bent and curved.

Kalasams are pure dance sequences where the actor is at great liberty to express himself and display his skills. The leaps, quick turns, jumps and the rhythmic co-ordination make *kalasams,* a joy to watch.

A Kathakali performance begins with the *kelikottu,* calling the audience to attention followed by the *todayam.* It is a devotional number performed where one or two characters invoke the blessings of the gods. *Kelikottu* is the formal announcement of the performance done in the evening when drums and cymbals are played for a while in the courtyard. A pure *nritta* piece known as the *purappadu* comes as a sequel to this. Then the musicians and drummers hold the stage entertaining the audience with an exhibition of their skills in *melappada. Tiranokku* is the debut on the stage of all characters other than the *pacha* or *minukku.* Thereafter, the play or the particular scene of the chosen play begins.

Ilakiattam is that part of the performance when the characters get an opprtunity to demonstrate their excellence in *abhinaya.* For the most part of the performance the dancers engage themselves in *cholliattam* which means acting in strict con-formity to the words in the *padams* sung by the accompanying musicians.

Thanks to the service done by the poet Vallathol, this classical dance form received a new impetus and today many innovations are also being made to suit the needs of a changing society.

छात्रों तथा अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियां

CREATIVE ACTIVITIES FOR STUDENTS AND TEACHERS

नृत्य तथा प्रस्तुत गतिविधियों पर आधारित सांस्कृतिक संग्रहों का उद्देश्य छात्रों को निम्न विषयों से अवगत कराना हैं :

- भारतीय नृत्य की विविध शैलियों की शारीरिक गतिविधि का व्याकरण और तकनीक।
- संचार के लिए नृत्य एक वाहन के रूप में
- नृत्य शब्दावली की पहुंच (प्रसार) और वह किस प्रकार राजाओं, महामानवों या जानवरों और फूलों की कहानियों द्वारा वास्तविक जीवन के निकट हैं;
- साहित्यिक तथा दृश्यात्मक सामग्री द्वारा नृत्य रूपों के ऐतिहासिक उद्‌भव का अध्ययन।

यहाँ पर कुछ गतिविधियाँ सुझाई गई हैं, पर इस संग्रह में दिये गये चित्रों को, तरह-तरह की शिक्षात्मक और सीखने की परिस्थितियों में प्रयुक्त किये जाने की संभावना है। शिक्षकों से अनुरोध है कि वे इन्हें स्कूल में पढ़ाए जाने वाले हर संभव विषयों में प्रयोग में लाएं। उन्हें यह भी सुझाव दिया जाता है कि वे संगीत व नृत्य के व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए नर्तकों-नर्तकियों को स्कूल में आमंत्रित करें। छात्रों को, यदि संभव हो तो, नृत्य के लघु खण्ड सिखाये जा सकते हैं, ताकि उन्हें शारीरिक गति के द्वारा लय, संगीत और भाव का प्रथम अनुभव प्राप्त हो सके।

1. भारत के सभी शास्त्रीय नृत्य रूप पौराणिक कथाओं और प्रकृति से लिए गये विषयों के ही इर्द-गिर्द घूमते हैं। देवी तथा देवताओं, पृथ्वी का उद्‌गम, प्रकृति के विविध रूपों आदि के बारे में कहानियाँ, पुराण कथाओं तथा दन्त कथाओं से चुनी जाती हैं और फिर उन्हें नृत्य द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। छात्रों को उन महत्वपूर्ण देवियों/प्राकृतिक स्वरूपों अथवा मूल जीवन की परिस्थितियों को चुनने के लिए कहा जा सकता है, जिन्हें उन्होंने नृत्य में देखा है। उदाहरणार्थ
   - शिव, विष्णु, गणेश, पार्वती, दुर्गा, सरस्वती।
   - महत्वपूर्ण नदियाँ, पवित्र वृक्ष, आभूषण पहनने या प्रतीकात्मक संदेशों के साथ फूल।

   फिर छात्रों को प्रत्येक के साथ संबंधित पौराणिक और दंत कथाओं को एकत्रित करने के लिए कहा जा सकता है। उदाहरण के तौर पर—
   - गणेश को किस प्रकार हाथी का सिर प्राप्त हुआ,
   - समुद्र के मंथन का क्या परिणाम था,
   - कमल के फूल से जुड़ी हुई दंत कथाएं आदि।

   इस सम्बन्ध में पुस्तकों से संदर्भ लेकर, उच्च नागरिकों से साक्षात्कार करके, परम्परागत रीति-रिवाजों के विश्लेषण और धार्मिक कर्मकाण्डों से जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

   यह अभ्यास छात्रों की जानकारी बढ़ाने में सहायता करेगा। यह सामग्री स्कूल के समाचार पत्र बोर्ड पर प्रदर्शित की जा सकती है और बाद में संदर्भ के लिए उसे परियोजना पुस्तक के रूप में बनाया जा सकता है।

2. मंदिरों और संग्रहालयों के सामयिक भ्रमण आयोजित किये जा सकते हैं, ताकि बच्चे शिल्प और चित्रकला के विषय में जान सकें। जो विशेष रूप से नृत्य से सम्बन्धित हैं, उनका विस्तार से अध्ययन किया जाना चाहिए। छात्रों को कला जैसे— मुखाकृति के भाव, मुद्राएं, भंगिमाएं, वेशभूषा, नृत्य रचनाएं और आसपास का वातावरण, आदि के प्रत्येक कार्य के विविध पहलुओं की ओर ध्यान देने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

   उच्च स्कूल के छात्रों को नृत्य रूप और शिल्प तथा चित्रकला की विशिष्ट वस्तुओं के बीच सम्बन्ध का अध्ययन करने के लिए कहा जा सकता है।

The Cultural Packages on dance and the suggested activities aim at familiarising the students with:

- the grammar and technique of body movement of different styles of Indian dance.
- dance as a vehicle for communication.
- the range of dance vocabulary and how closely it is related to real life — through stories of kings, super-humans or animals and flowers;
- the study of the historical evolution of dance forms through literary and visual sources.

A few activities have been suggested, however, there is scope for using the illustrations in this package in a variety of teaching and learning situations. The teachers are requested to use these in as many school disciplines as possible. They are also advised to invite dancers to the school for practical demonstration in music and dance. Students may be taught small dance pieces, if possible, for them to have a first-hand experience of rhythm, music and expression through body movement.

1. All classical dance forms in India revolve mainly around themes from mythology and nature. Stories about gods and goddesses, the origin of the earth, different aspects of nature, etc. are selected from myth and legend and then communicated through dance. The students may be asked to choose important deities, natural forms or real life situations which they have seen in dance, as for example,
   - Shiva, Vishnu, Ganesh, Parvati, Durga, Saraswati.
   - important rivers, sacred trees, flowers with symbolic messages or wearing ornaments.

   They may then be asked to collect all the mythological stories and legends connected with each. For example:
   - how Ganesh got the head of an elephant,
   - what was the outcome of the churning of the oceans,
   - legends linked with the lotus flower, etc.

   Reference from books, interviews with senior citizens, the observation of traditional customs and rituals can be various ways in which to gather information.

   This exercise will help the students widen their knowledge. The material can be exhibited on the bulletin board and made into a project book for later reference.

2. Periodic excursions may be organised to temples and museums so that children may be exposed to sculpture and painting. Those specifically related to dance should be studied in detail. The students should be encouraged to note down various aspects regarding each work of art — facial expressions, ***mudras,*** postures, costumes, dance formations and even the surroundings and environment.

   Students from the senior school may be asked to make a study of the relationship between the dance form and

छाया चित्रों, चित्रों, टिप्पणियों तथा विचारों के साथ एक फोल्डर तैयार किया जा सकता है। (छात्रों को नृत्य रूपों के साथ परिचित करवाने के लिए भ्रमण का कार्यक्रम आयोजित करने से पूर्व, इस संग्रह के चित्र ठीक उसी प्रकार से कक्षा में भी प्रयोग में लाए जा सकते हैं।)

3. छात्रों को उनके द्वारा देखे गए नृत्य रूप में प्रयुक्त होने वाली सभी विविध मुद्राओं या प्रतीकात्मक संकेतों के चित्र एकत्रित करने या बड़े चित्र बनाने के लिए कहा जा सकता है। पारम्परिक सज्जा के साथ एक बड़ा बोर्ड तैयार किया जा सकता है। प्रत्येक मुद्रा अथवा चित्रात्मक प्रस्तुतिकरण के नीचे उन्हें उसका नाम, अर्थ और उपयोगिता लिखने के लिए कहा जा सकता है। बड़ी कक्षा के छात्र, जहाँ पर मुद्रा/भाव प्रयुक्त किये गये हैं, उस स्थान पर साहित्य या गीत के छन्द (अनुच्छेद)जोड़ सकते हैं। उसी मुद्रा/भाव को विविध परिस्थितियों में प्रयोग में लाने के लिए प्रयास किया जाना चाहिए।

4. मुखाकृति भाव (चेहरे के भाव)– अभिनय नृत्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। अध्यापकों द्वारा छात्रों को नौ 'रस' समझाने चाहिए। विवरण का वर्णन छात्रों के आयु वर्ग के हिसाब से भिन्न भी हो सकता है।

   इसके बाद एक रुचिकर अनौपचारिक खेल हो सकता है। छात्रों को स्वतः बनाई गई परिस्थिति या कहानी पर एक भाव को मूल रूप में प्रस्तुत करने के लिए कहा जा सकता है। कक्षा के बाकी छात्रों को कहानी तथा उस मूक अभिनय में व्यक्त 'रस' को बताने के लिए कहा जाना चाहिए। 'भय' के या डर के भाव को, उदाहरणार्थ इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है– अंधेरे और घने जंगल में खतरनाक परिस्थिति में फंसा हुआ एक बच्चा और एक डरावना जानवर उस का पीछा करता हुआ। इस भाव को सरल मुद्राओं और प्रमुख अभिव्यक्तियों द्वारा प्रतिबिंबित किया जा सकता है।

5. अध्यापक साधारण गतिविधियाँ आयोजित करके छात्रों को उनकी लय या 'ताल' को सुधारने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। छात्रों को चार्ट्स तैयार करने के लिए कहा जा सकता है, जहाँ पर आकर्षक नमूनों द्वारा लयात्मक रूपों की मात्राओं (ताल) को दृश्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया हो। भिन्न-भिन्न समय चक्रों के लिए भिन्न-भिन्न नमूने प्रयोग में लाए जाने चाहिए। (चार्ट में दिखाए गये प्रतीक चिन्हों का महत्व समझाने के लिए एक कुंजी (उत्तर तालिका) बनाई जा सकती है।) अधिक अनुभवी छात्रों को और अन्य गतिविधियाँ दी जा सकती हैं।

   प्रत्येक छात्र को एक निश्चित संख्या के समय बाधक दिये जाने चाहिए और उन्हें लय और गतियों के विविध परिवर्तनों और संयोजनों के प्रयोग से दिये गये समय के ढांचे के भीतर लयात्मक नमूने तैयार करने के लिए कहा जाना चाहिए। यह गतिविधि स्वाभाविक रचनात्मकता को सामने लाएगी और शुद्धता तथा एकाग्रता का विकास करेगी।

6. अध्यापक छात्रों को दैनिक जीवन में नृत्य जैसा परियोजना-विषय दे सकते हैं। छात्रों को अपने आस-पास के लोगों की अभिव्यक्तियों तथा क्रिया-कलापों का विश्लेषण करने के लिए कहा जा सकता हैं। फिर छात्र वैज्ञानिक नृत्य या मुद्राओं की एक सूची एकत्रित कर सकते हैं, जो दैनिक जीवन में प्रयुक्त होती है और वे उनका उद्गम प्रतिदिन की गतिविधियों में ढूंढ सकते हैं। छात्रों को इस बात से अवगत कराना चाहिए कि कला रूप और दैनिक जीवन– दोनों आपस में गहरे जुड़े हैं। दरअसल, उन्हें कुछ समान मुद्राएं चुनने के लिए कहा जा सकता है और फिर वे उन्हें सौन्दर्यात्मक नृत्य मुद्राओं में अपनी कल्पना के अनुसार परिवर्तित कर सकते हैं।

7. महत्वपूर्ण धार्मिक व सामाजिक त्यौहारों के अवसर पर छात्रों को लघु नृत्यों की रचना करने के लिए कहा जा सकता है, जिसमें त्यौहार के महत्व को

specific items of sculpture and painting.

A folder with photographs, pictures, observations and comments may be prepared. (Pictures from this package may be used similarly in the class room before organising an excursion in order to make the students familiar with the forms).

3. Students may be asked to make large drawings or collect pictures of all the different ***mudras*** or symbolic actions used in the dance form they have seen. A large board may be prepared with traditional decorations. Under each ***mudra*** or pictorial representation, they may be asked to write its name and meaning and what it is used for. Senior students can add the ***Sahitya*** or verses of the songs where the mudra/action is used. An attempt should be made to project the use of the same mudra/action in different situations.

4. Facial expression —***Abhinaya,*** forms an important part of dance. The teacher should explain the nine ***rasas*** to the students. The details of explanation can vary with each age group.

   An interesting informal game can follow this. The students can be asked to mime a mood in a self-created situation or story. The rest of the class may be asked to interpret the story and name the ***rasa*** that it portrays. ***Bhaya*** or fear can be depicted at length, for example, as a child trapped in a dangerous situation in a dark and gloomy forest with a fearsome animal chasing the child. Simple movements and prominent expressions can reflect the mood.

5. The teacher can encourage the students to improve their rhythm and ***tala*** by organising simple activities. The students should be asked to prepare charts where the beats of the rhythmic pattern are visually represented using attractive motifs. Different motifs should be used for each different time cycle. (A key can be made to explain the value of the symbols shown in the chart).

   More experienced students may be given another graded activity. Each student may be allotted a fixed number of time bars and be asked to create rhythmic patterns within the given time frame, using various permutations and combinations of speeds and rhythm. This activity will bring out the inherent creativity and develop precision and concentration.

6. The teacher may give the students a project topic, such as 'Dance in daily life'. The students may be asked to observe the actions and expressions of the people around them. Students can then compile a list of scientific dance movements that are akin to those in daily life and trace their origin in every day actions and mannerisms. The students must be made to realize that art forms and real life are closely linked to each other. Infact, they may be asked to pick out a few common gestures and convert them into aesthetic dance movements, using their imagination.

7. During important religious and social festivals, the students may be asked to compose short dances depicting — the relevance of the festival, for example, birth of Jesus, Lord

बताया गया हो। उदाहरणार्थ ईसु के जन्म, भगवान् बुद्ध जन्मोत्सव नाटक और होलिका की कहानी तथा त्यौहार को मनाने के तरीके, आदि को प्रस्तुत किया जा सकता है। इस नृत्य को त्यौहार के दिन स्कूल की सभा में प्रस्तुत किया जा सकता है। यह गतिविधि छात्र को इस बात से अवगत कराती है कि किस प्रकार अच्छाई और सत्य का विचार सभी धर्मों पर गहरा प्रभाव डालता है।

8. छात्रों की रचनात्मकता को खोजने के क्रम में अध्यापकों को चाहिए कि वे उन्हें सामान्य रूप से, जीवन से सम्बन्धित रुचिकर गतिविधियों से जोड़ें। अतः अध्यापक अखबारों और पत्रिकाओं से सावधानीपूर्वक चुने हुए उपयोगी विषय छात्रों को दे सकते हैं। उदाहरणार्थ–

   – शान्ति की आवश्यकता
   – हिंसा की व्यर्थता
   – सामाजिक असमानताएं
   – राष्ट्रीय एकता
   – पर्यावरण संरक्षण

   10 से 15 छात्रों के समूहों को आकर्षक तथा प्रभावकारी ढंग से एक नाटकीय दृश्य झांकी बनाने के लिए कहा जा सकता है। झांकी की योजना और डिजाइन साज-सज्जा आदि छात्रों के समूहों द्वारा ही की जानी चाहिए। इस गतिविधि का उद्देश्य छात्रों में चेतना जगाना है और उनकी कलात्मक प्रतिभा का उपयोग करना है। इन झांकियों को राष्ट्रीय दिवसों अथवा खेल दिवस के अवसर पर प्रस्तुत किया जा सकता है।

9. विषयक नृत्य, बैले स्कूल के वार्षिक दिवस समारोह अथवा अन्य किसी समारोह के लिए तैयार किया जा सकता है। सभी अध्यापक एक साथ मिलकर काम कर सकते हैं और 400-500 छात्रों को लेकर एक कार्यक्रम (शो) प्रस्तुत कर सकते हैं। इसके लिए प्रासंगिक रुचि के विषय जैसे– प्रकृति और संस्कृति का संरक्षण, साक्षरता, भूख और गरीबी, झोंपड़ीवासियों की समस्याएं आदि को चुना जा सकता है। ऐसा विशालकाय निर्माण स्कूल तथा समुदाय तक भी पहुंच सकता है।

10. अन्य बहुत महत्वपूर्ण गतिविधियां छात्रों के लिए आयोजित की जा सकती हैं। सभी अन्य शास्त्रीय तथा लोक नृत्य-रूपों के प्रति छात्रों में रुचि जगाने हेतु उन्हें कहा जाना चाहिए कि वे जिस नृत्य रूप से परिचित हैं, उससे अन्य नृत्य रूपों की तुलना करें।

    सां.स्रो.प्र.के. द्वारा नृत्य पर तैयार किये गये संग्रहों के अध्ययन द्वारा विविध प्रकार की गतिविधियां आयोजित की जा सकती हैं, साथ ही भारतीय नृत्य रूपों के प्रति छात्रों की जानकारी बढ़ाने के लिए चित्रों, चार्ट, वेशभूषा, संगीत वाद्यों और पुस्तकों की प्रदर्शनियां लगाई जा सकती हैं।

11. आजकल, देश के सभी प्रमुख नगरों में नियमित रूप से नृत्य-उत्सवों का आयोजन किया जा रहा है। हाल ही के वर्षों में, खजुराहो, चिदंबरम्, कोणार्क आदि स्थलों के मंदिर महत्वपूर्ण नृत्य उत्सवों के केन्द्रों के रूप में उभर कर सामने आये हैं। स्पीक मैके के समारोह तो छोटे नगरों में स्कूलों के छात्रों तक भी पहुंचते हैं। इन कार्यक्रमों का विस्तृत ब्यौरा सभी समाचार पत्रों में दिया जाता है। छात्रों को समाचार पत्रों से इन कार्यकमों के ब्यौरों की कतरनें एकत्रित करने उन्हें इनका अध्ययन करने और भविष्य के सन्दर्भ हेतु संभाल कर रखने के लिए कहा जाना चाहिए। नृत्य कार्यक्रमों में से प्रसिद्ध कलाकारों तथा सहायकों के नाम, विशिष्ट या दुर्लभ प्रस्तुतियों और ताल, भाव तथा अभिनय पर रुचिकर टिप्पणियां (समीक्षा) एकत्रित की जानी चाहिए तथा उनका अध्ययन किया जाना चाहिए।

12. नर्तकों (नृत्य कलाकारों) की सूचियाँ, उनके नृत्य की शैलियां, संगठन जहाँ वे काम करते हैं, नृत्य के संस्थान, नृत्य रूपों पर पुस्तकें, पत्रिकाएं, मासिक पत्रिकाएं एकत्रित की जा सकती हैं। ऐसा नियमित रूप से किया जा सकता है, जिसमें प्रति वर्ष अतिरिक्त जानकारी जोड़ी जा सकती है।

Buddha, the Nativity play, the story of Holika and the manner in which the festival is celebrated. These dances may be presented at the school assembly on the day of the festival. This activity make the students aware of how the concept of goodness and truth permeates all religions.

In order to discover the creativity of the students, the teacher must involve them in interesting activities related to life, in general. The teacher may therefore distribute carefully selected topics on relevant issues from newspapers and magazines, for example,

— the necessity for peace,
— the futility of violence,
— social inequalities,
— national integration,
— conservation of the environment.

Groups of 10 to 15 students may be asked to form tableaus in an appealing and effective manner. The planning and designing of the tableaus should be done by the student group themselves. The aim of the activity is to create awareness among the students and use their artistic talent. These tableaus may be presented on national days or on sports day.

9. A thematic dance ballet can be prepared for the school annual day celebrations or any other function. The teachers can work together and organise a show involving 400-500 students. Themes of topical interest like conservation of nature and culture, literacy, hunger and poverty, the problems of slum-dwellers, etc. may be enacted. Such a mammoth production will reach out to the school and the community as well.

10. Another very important activity must be organised for the students. In order to awaken in them an interest in all the other classical and folk dance-forms, the students must be encouraged to compare other dances with the style they are familiar with.

    By studying all the packages on dance prepared by CCRT, a variety of activities may be organised. In addition, exhibitions with pictures, charts, costumes, musical instruments, and books can be arranged to widen the knowledge of the students regarding Indian dance forms.

11. Nowadays, dance festivals are conducted regularly in all the major cities of the country. In recent years, the temples of Khajuraho, Chidambaram, Konark etc. have risen as centres for important Dance festivals. The Spic Macay festival reaches even the students of schools in small towns. Extensive reporting is done in all newspapers. The students should be asked to collect newspaper cuttings, study them and keep a record for future reference. Names of artists and famous accompanists, information regarding rare or special items in the performances and interesting comments on *tala, bhava* and *abhinaya* may be collected and studied.

12. Lists of dancers, their styles of dance, the institutions where they work, the academies of dance, books on dance-forms, magazines/journals on the subject, may be compiled. This may be an ongoing programme in which additional information can be noted every year.

आभार : इंटरनेशनल सेंटर फॉर कथकली, नई दिल्ली

Acknowledgement : International Centre for Kathakali, New Delhi

कथकली नृत्य

1. कथकली के प्रदर्शन से पहले घण्टी के समान धातु केएक दीपक को नारियल के तेल में प्रज्ज्वलित किया जाता है, इसे *निलाविलक्क्* कहा जाता है। यह दीपक पर्दे के सामने रखा जाता है और पुराने दिनों में केवल यही दीपक मंच पर प्रकाश का एकमात्र स्त्रोत होता था। दो व्यक्ति आयताकार पर्दे को पकड़ते हैं, जिसे *तिरश्शीला* कहा जाता है। कुछ निश्चित पात्रों के मंच पर प्रवेश के लिए इसका एक विशेष अर्थ है।

2. वाद्य समूह में, जो केरल की अन्य परम्परागत निष्पादन कलाओं में भी प्रयोग में लाया जाता है, विधिवत् *चेंडा, मद्दलम्, चेंगिला, इलत्तालम्, इडक्का और* शंख को सम्मिलित किया जाता है। यहाँ कलाकार (वादक) *मद्दलम्, चेंगिला, इलत्तालम्* तथा *इडक्का* बजाते हुए दिखाई दे रहे हैं।

3. *तिरानोट्टम्,* प्रदर्शन से पहले कुछ प्रमुख चरित्रों का परिचय है, इसका शाब्दिक अर्थ है– पर्दे के पीछे से झांकना। यह चरित्र (पात्र) नाटक गृह केपार्श्व भाग से मंच पर प्रवेश नहीं करतेपर पर्दे के पीछे खड़े होते हैं। पर्दा हटाने से पहले नर्तक एक लघु नाटकीय नृत्य खण्ड प्रस्तुत करता है। यह एक रहस्य की रचना करता है; दर्शक उत्कंठा से पर्दे के हटने और नर्तक को देखने की प्रतीक्षा करते हैं। इस चित्र में एक *कत्ती* चरित्र *तिरानोट्टम्* करते हुए दिखाई दे रहा है।

4. *चुवन्नाताढ़ी* (लाल रंग की दाढ़ी वाला चरित्र) का *तिरानोट्टम्* इस चित्र में दर्शाया गया है। यह दानव या तामसिक चरित्रों जैसे दुःशासन या राक्षस के रूप में जाने जाते हैं। इस *तिरानोट्टम्* में इस चरित्र की सारी क्रूरता और दानवीय शक्ति को प्रदर्शित किया जाता है। इसकी डरावनी विशेषताओं को बढ़ाने के लिए सहायक संगीत व आवाजों की उत्पत्ति नर्तक द्वारा की जाती हैं।

5. *अहार्य,* जो कि वेशभूषा और मेकअप (साज-सज्जा) है, कथकली नृत्य के प्रदर्शन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मेकअप का पहला भाग *तेप्प्* है, जो स्वयं नर्तक द्वारा किया जाता है। यहाँ नर्तक *वेल्लात्ताढ़ी* (सफेद दाढ़ी वाले चरित्र) के लिए मेकअप करता हुआ दिखाई दे रहा है।

6. कथकली मेकअप के चरण हैं-*तेप्प्, चुट्टी* और *उडुत्तुकेट्ट्।* मेकअप के दूसरे चरण को *चुट्टीकुत्त्* कहा जाता है, जो मेकअप में प्रशिक्षित कलाकारों द्वारा किया जाता है। चावल तथा चूने के घोल के मिश्रण का प्रयोग मेकअप के आधार के रूप में किया जाता है। आजकल दाढ़ी को दर्शाने के लिए ड्राईंग पेपर की पट्टी को काट कर चेहरे के ऊपर लगाया जाता है। *चुट्टी* कलाकार वेशभूषा का प्रमुख भी होता है।

7. इस चित्र में मेकअप का तीसरा चरण *उडुत्तुकेट्ट्* दिखाई दे रहा है। कपड़े के बहुत से वस्त्रों से एक विशाल घाघरा बनाया गया है, जो केरल के अनेक परम्परागत शास्त्रीय नृत्यों जैसे तेय्यम्, मुडियेट्ट् और कूडियाट्टम् में पहनी जाने वालीवेशभूषा के समान है। कथकली नृत्य में यहाँ प्रत्येक चरित्र के लिए आदर्शभूत वेशभूषा और मुकुट हैं।

8. कथकली नृत्य में प्रत्येक चरित्र की रचना के लिए भिन्न मेकअप का प्रयोग किया जाता है। *पच्चा, कत्ती, ताढ़ी, करि* या *मिनुक्क्* प्रमुख पात्र हैं। *पच्चा* सतगुण या उत्तम विशेषताओं जैसे नल, युधिष्ठिर, अर्जुन आदि से सम्पन्न है। *पच्चा* चरित्र का चेहरा चमकीले हरे रंग से रंगा होता है। इस चित्र में आप एक नर्तक को कथकली की एक मौलिक मुद्रा में देख रहे हैं।

9. यहां एक *पच्चा* चरित्र तांडव की एक वीरतापूर्ण नृत्य मुद्रा में दिखाई दे रहा है, इसे *कलाशम्* कहा जाता है। इसे पद्य गायन के अन्त में प्रस्तुत किया जाता है।

10. यह चित्र एक नारी चरित्र द्वारा प्रवेश से पहले ली गई मौलिक स्थिति को दर्शाता है। कथकली नृत्य में ज्यादातर आयताकार या चतुर्भुजाकार रूप के भूतल और स्थान का प्रयोग किया जाता है।

11. यह चित्र नर्तकी को एक नारी चरित्र की सम्पूर्ण वेशभूषा में प्रवेश करते हुए दर्शा रहा है।

12. इस चित्र में आप हस्तमुद्रा *अर्द्धचंद्रम्* को देख रहे हैं, जिसका प्रयोग अर्द्धचंद्र को दर्शाने के लिए किया जाता है। कथकली में मुद्राएं असंयुक्त; एक हाथ की मुद्राओं, संयुक्त; दोनों हाथों की मुद्राओं या मिश्रम्; सम्मिलित मुद्राओं द्वारा प्रदर्शित की जाती हैं।

13. इस चित्र में आप नर्तक को *हस्तलक्षणा दीपिका* की चौबीस हस्तमुद्राओं में से ली गई चौदहवीं हस्तमुद्रा को प्रदर्शित करते हुए देख रहे हैं, इसे *भ्रमरा* कहा जाता है। *हस्तलक्षणा दीपिका* नाट्यशास्त्र की एक शाखा है, जो कूडियाट्टम् और कथकली में हस्तमुद्रा भाषा के लिए आधार प्रदान करती है।

14. इस चित्र में आप कृष्ण को देख रहे हैं, उसके मेकअप तथा मुकुट को ध्यान से देखिए। वह बांसुरी बजा रहा है, जबकि राधा प्रेम और भक्ति से उसकी बांसुरी सुन रही है।

15. इस चित्र में कृष्ण अपने *पीलिमुडि* (मुकुट) के साथ दिखाई दे रहा है। कृष्ण के लिए मुकुट भिन्न प्रकार का है, जिसके द्वारा यह पता चलता है कि वह *पच्चा* चरित्र है। राम के लिए भी इसी प्रकार की वेशभूषा और मेकअप को प्रयोग में लाया जाता है। मेकअप का यह प्रकार केरल में गुरुवायूर मंदिर में प्रस्तुत किये जाने वाले कृष्णानाट्टम् के बहुत सादृश्य है।

16. यहाँ कृष्ण अपनी हस्तमुद्रा द्वारा एक भंवरे को एक कमल से मधु पीते हुए प्रदर्शित कर रहा है। यह *सम्भोग श्रृंगार* या प्रेम का प्रतीक है।

17. कथकली में नारी चरित्र को *मिनुक्क्* कहा जाता है। इस चित्र में आप *मिनुक्क्* चरित्र को करुणा रस या दया भाव का चित्रण करते हुए देख सकते हैं।

18. नल और दमयंती की कहानी से लिए गये इस दृश्य में नव-दम्पत्ति (नल व दमयंती) को महल के बगीचे में अपना मधुमास मनाते हुए प्रदर्शित किया गया है।

19. इस चित्र में आप *वेल्लात्ताढ़ी* (सफेद दाढ़ी वाले चरित्र) को देख रहे हैं, जो कथकली में एक महत्वपूर्ण चरित्र है। नर्तक द्वारा पहना गया गोल मुकुट, पंखो वाली जाकेट और विशेष मेकअप हनुमान का चित्रण कर रहा है, वेशभूषा एक बंदर का अक्स बना रही है। यहां हनुमान् एक हाथी के लिए भाव प्रदर्शित करते हुए दिखाई दे रहा है।

20. यह नाटकीय दृश्य नाटक *दुर्योधन वधम्* से लिया गया है। कथकली नृत्य नाट्य पहलू के मामले में बहुत समृद्ध है। इस दृश्य में *भगवद्दूत्* उपकथा का चित्रण किया गया है। वह इस प्रकार है कि कृष्ण शांति दूत के रूप में दुर्योधन के पास पहुंचे और अंततः पांडवों को पांच गांव दिये जाने की प्रार्थना कर रहे हैं पर दुर्योधन ऐसा करने से इंकार कर रहा है।

21. यह चित्र *कल्याण सौगंधिकम्* से लिये गये एक दृश्य को दर्शा रहा है। इस कहानी से ली गई उपकथा यह है कि जब भीम दिव्य फूल *कल्याण सौगंधिका* की तलाश में निकले और कदली वन पहुंच गये। हनुमान ने भीम की परीक्षा लेने के लिए उसके रास्ते को रोक लिया तब क्रोधित भीम ने कहा कि बूढ़े वानर एक तरफ हटो।

22. कथकली नृत्य नाटक का एक बहुत शैलीगत तत्व है। इस चित्र में आप *कीचक वधम्* की कहानी से लिये गये एक दृश्य को देख सकते हैं। इस चित्र में पांचाली, जो अपना वेश बदले हुए है और राजा विराट के महल में सेविका के रूप में कार्य करती है, कीचक के कामातुर निवेदन को अस्वीकार कर रही है।

23. कथकली नृत्य में महाकाव्यों से ली गई उपकथाएं बहुत प्रसिद्ध हैं। यह दृश्य *तोरणा युद्धम्* से लिया गया है। सीता, रावण ने जिसका अपहरण कर लिया था, अशोक वन में बंदी बना कर रखी गई है। रावण उसे मूल्यवान् आभूषणों और कपड़ों का लालच दे रहा है तथा उसे अपने साथ विवाह करने के लिए कह रहा है, पर सीता ने उसका यह प्रस्ताव अस्वीकार दिया और उसे गम्भीर परिणाम भुगतने की धमकी दे रही है।

24. *करुत्तात्ताढ़ी* (काली दाढ़ी वाला चरित्र) *काट्टालन्* है, इसका अर्थ एक शिकारी या जंगल के निवासी से है। इस चरित्र का मेकअप और वस्त्र सम्पूर्ण रूप से काले या नीले हैं। मुकुट आकार में बेलनाकार है और ऊपर से मोर के पंखों से सजा हुआ है।

Kathakali Dance

1. Before a Kathakali performance, the bell metal lamp called *Nilavilakku* is lighted with coconut oil. It is placed in front of the curtain and was the only source of light on the stage in olden days. Two men hold the rectangular curtain called *Tirasseela*. It has a special significance for the entry of certain characters on the stage.
2. The orchestra which is also used in other traditional performing arts of Kerala, normally comprises the *Chenda, Maddalam, Chengila, Ilathalam, Idakka* and *Shankhu*. Here the artists are seen playing on the *Maddalam, Chengila, Ilathalam* and *Idakka*.
3. *Tiranottam,* literally meaning looking from behind the curtain, is the introduction of certain principal characters before the performance. These characters do not make a stage entry from the wings but, stand behind the curtain. The dancer performs short dramatic dance pieces before the curtain is removed. This creates a suspense as the audience eagerly waits the removal of the curtain to behold the dancer. In this picture, a *kathi* character is seen doing *tiranottam*.
4. *Tiranottam* of *chuvanna thadi* (red bearded character) is shown in this picture. These are known as the demonic or *tamasika* characters such as,Dussasan or Rakshasas. All the cruelty and evil power of the character is displayed in this *tiranottam*. The accompanying music and sounds produced by the dancer also add to his fearsome quality.
5. *Aharya,* that is, costumes and make-up,play a significant role in Kathakali dance performance. The first part of the make-up is the *teppu* which is done by the dancer himself. Each character has a distinct *teppu*. The dancer is seen putting on the make-up for *vellathadi* (white bearded character).
6. The stages of make-up of Kathakali are the *teppu, chutti* and *uduthukettu*. The second stage of make-up is called *chuttikuthu,* which is done by trained make-up artists. A mixture of rice and lime paste is used as base and, nowadays, strips of drawing paper are cut and placed on top to give the effect of the beard. The *chutti* artist is also in charge of the costumes.
7. The third stage of make-up, *uduthukettu* is seen in this picture. The large skirt made up of several metres of cloth is similar to the costume worn in many traditional ritual dances of Kerala like Teyyam, Mudiyettu and Koodiyattam. In Kathakali dance, there are typical costumes and headgears for each character.
8. In the Kathakali dance, each character type uses a different make-up. The more prominent characters are the *pacha, kathi, thadi, kari or minukku*. The *pacha* is endowed with *satwaguna* or noble qualities such as Nala, Yudhishtira and Arjuna. The face of the *pacha* character is painted bright green. In this picture you see a dancer in the basic stance of Kathakali.
9. A *pacha* character is seen here in a vigorous dance pose of *tandava,* called *kalasam*. It is performed at the end of sung verses.
10. This picture shows the basic position taken by the female character before the entry. Kathakali dance mostly uses space and floor area to form rectangles and squares.
11. This picture shows the dancer in full costume of a female character making an entry.
12. In this picture you see the *Ardhachandram,* the hand gesture which is used to signify the half-moon. In kathakali, *mudras* may be shown through *asamyukta,* single handed gestures, *samyukta,* double handed and *mishra,* mixed gestures.
13. Of the twenty four hand gestures from *Hastalakshana Deepika,* in this picture you see the dancer showing the 14th hand gesture called *Bhramara*. The *Hastalakshana Deepika* is an offshoot of *Natya Shastra,* which is the basis for the hand gesture language in Koodiyattam and Kathakali.
14. In this picture you see Krishna, notice the headgear and make-up. He is playing the flute while Radha listens with love and devotion.
15. In this picture, Krishna is seen with his *peelimudi*. The headgear for Krishna is different, though he is a *pacha* character. Rama also appears with the same costume and make-up. This type of make-up has close resemblance to the form known as Krishnanattam performed in the Guruvayoor temple in Kerala.
16. Krishna showing the hand gesture of a beetle sucking honey from a lotus is seen here. It is a symbol of love or *sambhoga shringara*.
17. The female character in Kathakali is called *minukku*. In this picture you can see the *minukku* character depicting *karuna rasa* or compassion.
18. A scene from the story of Nala and Damayanti shows the newly wed couple enjoying their honeymoon in the palace garden.
19. In this picture you see the *vellathadi* (white bearded character) which is an important character in Kathakali. The special make-up, jacket with fur and the round headgear is worn by the dancer depicting Hanuman, the costume gives the illusion of a monkey. Hanuman is seen here showing the gesture for an elephant.
20. This is a dramatic scene from the play *Duryodhana Vadham*. Kathakali is very rich in the *natya* aspect of dance. This scene depicts the *Bhagavaddoothu,* that is, Krishna arriving as the messenger of peace to request that at least five villages be given to the Pandavas. Duryodhan refuses to do so.
21. This picture shows a scene from *Kalyana Saugandhikam*. The episode from the story is when Bhima goes in search of the divine flower *Kalyana Saugandhika* and reaches *Kadaleevana*. Hanuman tries to put Bhima to test and blocks his way. An angry Bhima asks the old monkey to step aside.
22. Kathakali dance has a very stylised element of drama. In this picture you can see a scene from the story of *Keechaka Vadham*. The lustful approach of Keechaka is repulsed by Panchali who is disguised and working as a servant at King Virata's palace.
23. Episodes from the epics are very popular in Kathakali dance. This scene is from *Thorana Yudham*. Sita who has been abducted by Ravana is held captive in the *Ashoka-vana*. He offers valuable ornaments and clothes to her and asks her to marry him. But Sita refuses and warns him of serious consequences.
24. *Karutha thadi* (black bearded character) is the *Kattalan* meaning a hunter or forest dweller. The make-up and dress are completely black or blue. The headgear is cylindrical in shape and is decorated with peacock feathers on top.